प्यारे बच्चों के लिए मेरा सन्देश

- आचार्य कनकनन्दी

चाल : 1. चन्दा मामा... 2. तुम दिल की धड़कन...

प्यारे प्यारे बच्चे हो... दिल के तुम (तो) सच्चे हो...

सहज-सरल से ऊँचे हो... भोले-भाले अच्छे हो...

नटखट व हठी हो... हँसी-मजाक में मीठे हो...

खेल-कूद में मस्त हो...मीठी नींद में चुस्त हो...

रोना-हँसना काम हो...चिन्तामुक्तिका धाम हो...

भेद-भाव से मुक्तहो... प्रेम-मैत्री से युक्त हो...

सबसे शिक्षा लेते हो...पुस्तक बिना सीखते हो...

प्रकृति की पाठशाला में/से...बिना दबाव पढ़ते हो...

बड़ों के तुम गुरु हो... सहजता की मूरत हो...

सीखते नहीं बड़े हैं...विकृति/(कृत्रिमता) से भरे हैं...

तुम ऐसा न बनना...बाल/(अच्छे) भाव को न त्यजना...

अच्छे भावों को बढ़ाना...महामानव ही (है) बनना...

महान् काम ही करना...विश्व में शान्ति फैलाना...

भविष्य तुम्हारा जमाना... 'कनक' सन्देश मानना...

Scanned by TapScanner

बच्चे क्यों रहते हैं प्रसन्न

(बड़े भी बच्चों से खुश रहने का यथायोग्य गुर सीखें)

- आचार्य कनकनन्दी

(राग – गंगा तेरा पानी अमृत)

बालक ! तेरी खुशी अपार, काव्य में लिखा न जाय।
उछल कूद व दौड़ धुप में, जीवन बीतता जाय।। ध्रु. ।।
हँसी मजाक व घूमना-फिरना, तुम्हारा कर्त्तव्य होय।।
धूली मिट्टी व रेत खिलौना, तुम्हारा सर्वस्व होय।।
अपना-पराया भेद-भाव नहीं, वैश्विक कुटुम्ब होय।
पशु-पक्षी व बालक बालिका, तुम्हारे मित्र होय।।
हानि-लाभ व व्यापार नौकरी, तुम से दूर होय।
खाना खिलाना प्रसन्न रहना, तुम्हारी सम्पत्ति होय।।
नदी नाल वन व उपवन, तेरे विद्यालय होय।
तैरना चढ़ना उससे सीखना, तुम्हारा पाठ होय।।
फैशन व्यसन दिखावा आडम्बर, तुमसे नाता न होय।
सरल सहज भोला-भाला, तुम्हारा स्वरूप होय।।
सबसे सीखते सबको सिखाते, सहज गुरु हो तू ही।
बड़े होकर विकृत न होना, ये प्रतिज्ञा करो सही।।
प्राकृतिक है तेरा तन (है), भोला तेरा है मन।
प्रकृति तेरी पाठशाला, प्राकृतिक तेरा प्रसन्न।।
बड़े भी सीखे बच्चों से, प्राकृतिक खुश रहना।
बिना विद्यालय बिना पैसे से, सीखे खुश रहना।।
तेरा रूप मैं सदा अपनाता तन व मन में दोय।
तन है नंगा मन है चंगा, 'कनक' बालवत् होय।।
इसलिये तो बाल्यकाल से, मैंने लिया दो नियम।
जीवनभर बालक रहूँगा, रहूँगा विद्यार्थी सम/(अर्जन करूँगा ज्ञान)।।

विश्व धरा के अनमोल

निस्पृह सन्त कनकनन्दी जी गुरुदेव

सुज्ञेता-श्रमण मुनि सुविज्ञसागर

★ हल्दी घाटी में, आयो है/(चौमासो)/(अरावली ने पायो है)SSS

....वो आतमज्ञानी सन्त अठे SSS

मायड़ थारो वो पूत अठे...माँ जिनवाणी रो लाल अठे SSS

वो सरल स्वभावी/उदारभावी गुरु/(सन्त) अठे SSS...(स्थायी)...

★ कनकनन्दी गुरु आयो है...श्री संघ साथ में लायो है...

जिनके शुभ-मंगल आगम से ...हर्षित/(धन्य) हुई यह माटी है...

इस तप-त्याग की भूमि पर...आयो श्री मुनि विज्ञानी है SSS

मायड़ थारो वो पूत अठे...

★ गुरुदेव प्रतिज्ञा न्यारी है...स्व-पर-विश्व कल्याणी है। (जन-गण-मन प्रेरणादायी हैSSS)

धन-जन-मान व ख्याति से...संकीर्ण पन्थ-मत-जाति से....

निर्लिप्त/(निस्पृह) साधक ये महामना....गृह छोड़ सन्त पद धारयो हैSSS

मायड़ थारो वो पूत अठे...

★ हिन्दु-मुस्लिम-सिख-ईसाई...दिक्-श्वेताम्बर जैनी भाई...

देश-विदेश से आवे है...वैज्ञानिक जन साधु-साध्वी...

शिष्य-भक्तजन स्वेच्छा से...कर रहे हैं सेवा गुरुवर की SSS

मायड़ थारो वो पूत अठे...

★ मैं वाचा हूँ इतिहास में...विज्ञानी ऋषि-मुनि/(गण) परम्परा...

उस परम्परा में आयो है...वैज्ञानिक धर्माचार्य कनक

ऐसे विज्ञानी/(अनुभवी) ऋषिवर को...'सुविज्ञ' करे शत नमन हैSSS

मायड़ थारो वो पूत अठे...

Scanned by TapScanner

''भारत की स्वतंत्रता के प्रथम प्रतीक : महाराणा प्रताप''

(हल्दी घाटी चातुर्मास है प्रतीक जैन एकता का)

(राग - तुम दिल की धड़कन...)

आचार्य कनकनन्दी

स्वाभिमान का है प्रतीक प्रताप...तथाहि राष्ट्र भक्तिका।
शान मान अभिमान गौरव का...स्वतंत्रता बलिदान का।ध्रु.।।
स्वावलम्बन व कर्त्तव्य बोध/(स्व गौरव) का...दृढ़ संकल्पशक्तिका।
उत्साह साहस पराक्रम का...प्रेम संगठन नीति का।।
सादा जीवन (व) उच्च आदर्श...उदार गांभीर्य वीर का।
सत्ता सम्पत्ति में अनासक्तिका...प्रबन्धन कौशल युद्ध का।। (1)
भामाशाह है प्रतीक दान का...राष्ट्र हिते त्याग भाव का।
पच्चीस लाख रूपये दान का...बीस हजार स्वर्ण मुद्रा का।।
पच्चीस हजार सैनिक योग्य, बारह वर्ष की व्यवस्था का।
पन्नाधाय है स्वामी भक्तिका...स्व-सन्तान बलिदान का।। (2)
चेतक अश्व स्वामी भक्तिका...भील सेना अन्त्योदय का।
हकीम खाँ व राणा पूंजा का...प्रतीक है सद्भाव का।।
उदाहरण है घास की रोटी...जंगलवास त्याग का।
भूमि पर शयन वन में भ्रमण...प्रतीक है कष्ट सहन का।। (3)
युद्ध उनका स्वतंत्रता का...भारत को मुक्त करने का।
जीवन उनका आदर्श का है...उन्नत आधुनिक भारत का।।
हल्दी घाटी चातुर्मास है...प्रतीक जैन एकता का है।
जैन/(जन) एकता मंच भी है...प्रतीक भामाशाह का है।। (4)
सूरी कनकनन्दी (का) संघ भी है...प्रतीक समन्वय/(राणा प्रताप) का है।
सहयोगी भक्तवृन्द है...प्रतीक प्रतापसेना के।।
अन्तिम लक्ष्य प्राप्त हो...स्वतंत्र आत्मतत्त्व के।
'कनकनन्दी' का आह्वान विश्व को...समता शान्ति पाने को।। (5)

हिरणमगरी से. 11, 11/6/2013, रात्रि = 1 : 58 (473 वीं प्रताप जयन्ती के अवसर पर)

पुण्यार्जक

तीर्थ, रितु (भरत) - दक्ष, छमछम (मणिभद्र) - अक्षत, तेजस (दीपेश)
चीतरी, डूंगरपुर (राज.)

Scanned by TapScanner